P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VI* February-2016

शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार हेतु मुद्रित माध्यमों की भूमिका

शिवानी
सहायक प्राध्यापिका,
संगीत विभाग,
एस.एम.एस. करमजोत कॉलेज,
होशियारपुर

राजेश शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
जी.एन.डी. विश्वविद्यालय,
अमृतसर

सारांश

भारत अपनी प्राचीन सभ्यता और समृद्ध संस्कृति के कारण पूरे विश्व में सुप्रसिद्ध है। यहां की कलाएं अद्वितीयता लिए हुए सम्पूर्ण विश्व में अनूठा स्थान रखती है। जिनमें से संगीत कला सर्वोत्तम है वैदिक काल से लेकर आज तक अनेक ज्ञानवर्धक संगीत ग्रंथों जैसे बृहद्येशी, नाट्यशास्त्र, भातखण्डे संगीत शास्त्र इत्यादि की रचना हुई है जिन पर आज अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान किए जा रहे हैं किंतु गौरतलब बात यह है कि इतने प्राचीन शास्त्राधार ग्रंथों का संरक्षण तथा वर्तमान पीढ़ी तक इन अमूल्य ग्रंथों की उपलब्धता किस प्रकार संभव हो पाई, तो इसका एकमात्र श्रेय माध्यम प्रकरण के अन्तर्गत मुद्रित व्यवस्था को जाता है। मुद्रित व्यवस्था के अन्तर्गत कई ऐसे माध्यम है जिन्होंने शास्त्रीय संगीत संरक्षण तथा प्रचार–प्रसार हेतू महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसकी विस्तृत जानकारी प्रस्तुत शोध प्रपत्र द्वारा दी जाएगी।

मुख्य शब्द : शास्त्रीय संगीत, संरक्षण, मुद्रित माध्यम (प्रिंट मीडिया), प्रचार–प्रसार।

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति बहुत ही समृद्ध और प्राचीन है जिसमें मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष चाहे वे धार्मिक हो, ऐतिहासिक हो, दार्शनिक हो प्रत्येक पहलू को उजागर करने हेतु भिन्न–भिन्न काल खण्डों में भिन्न–भिन्न पक्षों से संबंधित ग्रंथों का संकलन किया गया। इस पावन धरती पर वेदों, उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों (रामायण व महाभारत) श्री गुरु ग्रंथ साहिब आदि अमूल्य ग्रन्थों की संरचना के साथ–साथ साहित्य व कला से संबंधित अनेक शास्त्रोक्त तथा क्रियात्मक ग्रन्थों की संरचना भी की गई। इन ग्रंथों की रचना का मूल लक्ष्य अपने ज्ञानकोष को दूसरों में बांटने की नेक प्रवृति थी जिसे हमारे प्राचीन विद्वानों व ऋषि मुनियों ने केवल मौखिक न रखकर व्यवहारिक रुप प्रदान करते हुए अनेक ग्रंथों को लिखित प्रारूप देकर संरक्षित किया, ताकि भावी पीढ़ी इस ज्ञानकोष से लाभान्वित हो सके। ये बात विचारनीय है कि आज से 500 वर्ष पूर्व, 1000 वर्ष पूर्व या 2000 वर्ष पूर्व लिखित ये ग्रंथ वर्तमान समय में भी अपने वास्तविक व संशोधित रूप में समाज में उपलब्ध है। संगीत कला स संबंधित अनेक प्राचीन ग्रंथ यथाः बृहद्येशी, नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकार, अभिनव गीतांजली इत्यादि (जो शास्त्रीय संगीत रूपी सरिता को अपने में संजोए हुए हैं) की उपलब्धता का एकमात्र श्रेय संरक्षण को जाता है। युगों युगों से भारतीय संस्कृति व कलाओं को संरक्षित एव विकसित रूप प्रदान करने के लिए भिन्न–भिन्न माध्यमों को प्रयोग में लाने की चेष्टा की गई। जैसे सीना–ब–सीना तालीम द्वारा, मुद्रित माध्यमों द्वारा तथा विद्युत संचालित माध्यमों इत्यादि द्वारा।

उद्देश्य

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक क्रियात्मक कला है क्रियात्मक पक्ष का लिखित स्वरुप जसे पुरानी घरानेदार बंदिशों के संग्रह को संरक्षित कर रखना आज से कई वर्ष पूर्व संभव न था क्योंकि इलेक्ट्रानिक मीडिया के उपकरणों यथाः सीडी, रिर्काडर इत्यादि आज से कुछ वर्ष पूर्व ही उपलब्ध हुए हैं। आज जो पारंपरिक बंदिशें, ग्रंथ तथा शास्त्र उपलब्ध है उसके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका मुद्रित माध्यमों ने दी है क्योंकि प्राचीन काल में मौखिक परंपरा के अन्तर्गत सम्पूर्ण शास्त्र को स्मरण कर अगली पीढ़ी तक पहुंचाना संभव न था और यदि आज वह शास्त्र जन साधारण तक सर्वसुलभ है तो उसका श्रेय मुद्रण व्यवस्था को जाता ह। इस शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य संगीत समाज में यह दर्शाना है कि आज, प्राचीन काल से वर्तमान काल तक शास्त्रीय संगीत का जो भी स्वरुप हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है उसका सशक्त आधार मुद्रित माध्यम है यदि मुद्रित माध्यमों को शास्त्रीय संगीत संरक्षण का आधारस्तम्भ कहा जाए, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति न होगी।

चूंकि प्रस्तुत शोध प्रपत्र का विषय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार हेतु मुद्रित माध्यमों की भूमिका है अतः इसी विषय पर केन्द्रित रहना न्यायसंगत है। 'मुद्रित माध्यम अंग्रेज़ी के 'प्रिंट मीडिया' के शब्द है मगर ये दोना शब्द हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में संप्रेषण के उस माध्यम को पदबद्ध करते हैं जो छपाई से अभिव्यक्त होता है। इस प्रकार छपाई द्वारा किया गया संप्रेषण का कोई भी प्रकार 'प्रिंट मीडिया' के अन्तर्गत आता है।'[1]

'सर्वप्रथम मुद्रण का उद्भव चीन में 868 ई० को हुआ। विश्व का पहला प्रेस स्थापित करने का श्रेय इंग्लैंड को जाता है और भारत में सर्वप्रथम प्रेस पुर्तगालियों द्वारा धार्मिक सामग्री के प्रचार प्रसार के लिए सन् 1550 ई० में गोवा में स्थापित किया गया।'[2]

अतः भारत में विद्यमान विभिन्न कलाओं और संस्कृति को एक सुरक्षित और विकसित रूप प्रदान करने के लिए लिखित सामग्री की आवश्यकता की पूर्ति हेतु मुद्रण व्यवस्था का अविर्भाव स्वाभाविक प्रतिक्रिया है य लिखित प्रारुप ही भावी पीढ़ी का पथ प्रदर्शक है और कला व संस्कृति के विकास में भी योगदान देता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत कला प्राचीन काल में गुरु–शिष्य परंपरा के अन्तर्गत मौखिक व वाचन क्रिया द्वारा विकास कर रही थी विकास की यह क्रिया एक वर्ग विशेष अर्थात घराना तक ही सीमित थी। मुद्रित माध्यमों के अविर्भाव के साथ ही शास्त्रीय संगीत सुरक्षित परिधि में विशेष वर्ग तक न रहकर जनमानस तक पहुँचा।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में अनेक संगीत विद्वानों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। हालांकि प्राचीन काल से ही संगीत संबंधित साहित्य जैसे शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक व क्रियात्मक पक्ष के अवशेष विभिन्न–विभिन्न पुरातन ग्रंथा, वेदों, उपनिषदों, बौद्ध–जैन धर्म ग्रंथों व पुस्तकों में भी प्राप्त होते हैं परन्तु मुद्रित माध्यमों का पूर्ण रूपेण विकसित स्वरुप स्वतन्त्रता उपरांत का ही है। इस प्रगति पथ में द्वै–विष्णु जी के नाम अग्रगण्य है।

'भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार हेतू मुद्रित माध्यमों को दो मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहली श्रेणी में वह साहित्य है जो प्रचार के लिए छपवाया जाता है। जैसे पोस्टर, पैम्फलेट्स, बुकलेटस, फोल्डर्स, हाऊस जर्नलस या इसी तरह की अन्य सामग्री।

दूसरी श्रेणी में समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें तथा इसी तरह की अन्य सामग्री, जिनका संचालन प्रचारकर्ता के अलावा कोई अन्य होता है।'[3]

मुद्रित साहित्य के प्रत्येक माध्यम का संबंध प्रचार तथा छपे संदेशों से है अतः उपदेशात्मक कला होने के कारण प्रत्येक माध्यम का अपना एक पृथक अस्तित्व है। शास्त्रीय संगीत के संरक्षण व प्रचार–प्रसार हेतु मुद्रित माध्यमों की सूची क्रमानुसार है।

1. ग्रंथ
2. पुस्तकें (i) अनुवादित पुस्तकें (ii) संगीत कोष
3. पत्रिकाए
4. शोध–प्रबंध
5. समाचार पत्र
6. डाक टिकट
7. पोस्ट कार्ड
8. पोस्टर
9. होर्डिंगस
10. बैनर
11. फलैक्स
12. पैम्फलेट्स
13. बुकलेटस
14. फोटोग्राफी

ग्रंथ

किसी भी विषय एवं समाज की ज्ञान वृद्धि आर विकास का प्रथम माध्यम 'ग्रंथ' हैं भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीनता की ठोस प्रमाणिकता वैदिक काल से आज तक लिखे गए भिन्न–भिन्न पक्षों से संबंधित संगीतक ग्रंथों से सुस्पष्ट हा जाती है। वैदिक काल से संगीत मनोषियों द्वारा सामवेद, गन्धर्ववेद, संगीत रत्नाकर, नाट्यशास्त्र, बृहद्येशी, संगीतोपनिष्त्सार, रागमाला, संगीतसार, राग विबोध, मानकुतूहल, संगीत दर्पण, चतुर्दण्डीप्रकाशिका, श्रीमल्लक्षयसंगीतम् इत्यादि ऐसे ही असंख्य ग्रन्थों की रचना की गई जो उस समय के शास्त्रीय संगीत सिद्धांतो तथा प्रचार प्रसार का अनावरण करते है। विदेशियों के आगमन से भारतीय संगीत में आए उतार चढ़ाव जैसे वीणा के साथ सितार, पखावज के साथ तबला, ध्रुपद–धमार के साथ ख्याल गायकी तथा अनेक नवीन रागों व तालों की रचना, स्वरों के क्रमिक विकास, जाति गायन, प्रबन्ध,ग्राम, मूर्च्छना इत्यादि की जानकारी का सशक्त आधार बहुमूल्य ग्रन्थ है जो मुद्रित व्यवस्था द्वारा युगों युगों से पीढ़ी दर पीढ़ी शास्त्रीय संगीत को सरंक्षित कर संगीत मर्मज्ञों, श्रोताओं, शिक्षकों व विद्यार्थियों की जिज्ञासा को शांत करने का कार्य कर रहे है संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, इत्यादि भाषाओं में लिखित यह ग्रन्थ वर्तमान समय में राष्ट्रभाषा के साथ–साथ लगभग प्रत्येक भाषा में उपलब्ध है इनके टीका, अनुवादित तथा परिष्कृत रूप भी संग्रहालयों मे उपलब्ध है जो वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन कर रहे है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में अधिकतर भाषाओं जैसे– संस्कृत, उर्दू, फारसो, मराठी, तलगू, गुजराती इत्यादि में लिखे गए ग्रंथों तथा पुस्तकों का हिंदी व अंग्रेज़ी अनुवाद भी लगभग उपलब्ध है जो कि अनुवादित पुस्तकों की श्रेणी में आता है।

पुस्तकें

शास्त्रीय संगीत के नैसर्गिक भविष्य की कामना हेतु जहाँ ग्रन्थों का अहम् महत्व है वहाँ पुस्तकें भी इसकी उन्नति एंव ज्ञानवद्धि का सशक्त माध्यम है जो जन साधारण तक सुलभ है। पुस्तकों का प्रारम्भिक सम्बन्ध विधार्थी वर्ग,शिक्षक वर्ग, विद्यालयों एंव विश्वविद्यालयों से है जहाँ नौजवान पीढ़ी जो देखती, सुनती और पढ़ती है उसी का अनुकरण भी करती है जिसका प्रभाव समाज, प्रान्त एवं राष्ट्र पर पड़ता है। शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, सिद्धांत, गायन शैली, प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक हुए परिवर्तनों को जानने की जिज्ञासा शोधार्थियों को पुस्तकों के माध्यम द्वारा ही सिद्ध होती है। पुस्तकों की असंख्य अभिवृद्धि के साथ–साथ मुद्रणालयों की संख्या में भी तीव्र गति से बढोत्तरी हुई है। 'पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने भी पुस्तकों के मुद्रण के

लिए 'संगीता प्रिंटिग प्रेस' नामक मुद्रणालय स्थापित किया था।[4] पुस्तकों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. सैद्धांतिक पक्ष से संबंधित पुस्तकें
2. क्रियात्मक पक्ष से संबंधित पुस्तकें
3. सैद्धांतिक–व्यवाहारिक पक्ष से संबंधित पुस्तकें

सैद्धांतिक पक्ष

सैद्धांतिक पक्ष से संबंधित पुस्तकों की श्रेणी में संगीत का शास्त्र पक्ष आता है अर्थात संगीत का लिखित प्रारूप आता है जिसके अन्तर्गत शास्त्रीय सिद्धांतों का समावेश हो यथाः श्रुति, स्वर, सप्तक, राग, नाद, ग्राम, मूर्च्छना व जाति, वाद्य इत्यादि का विस्तृत वर्णन होता है। पुस्तकों की संख्या अत्याधिक होने के कारण समस्त पुस्तकों का उल्लेख करना संभव नहीं है किंतु कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार है। यथाः भारतीय संगीत का इतिहास (शरदचन्द्र श्रीधर परांजपे) भारतीय संगीत में प्रबंध की अवधारणा (डा० स्मिता बहुगण), हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास (डा० सुनन्दा पाठक) संगीत विविधा (डा० मनोरमा शर्मा), संगीत और मनोविज्ञान (किरन तिवारी), हमारा आधुनिक संगीत (सुशील कुमार चौबे), संगोतायन (सीमा जौहरी) इत्यादि। इन पुस्तकों के माध्यम द्वारा आम वर्ग, जो संगीत के शास्त्र को जानने की उत्सुकता रखता है तथा संगीत प्रेमी है, शास्त्रीय संगीत के गूढ़ रहस्यों, उसकी गायन–वादन विधि, उत्तरी दक्षिणी पद्धति में भेद, तकनीकी शब्दावली से भली प्रकार से परिचित हो जाता है।

क्रियात्मक पक्ष

क्रियात्मक पक्ष से संबंधित पुस्तकों की श्रेणी में संगीत का व्यवहारिक पक्ष दृष्टिगोचर होता है जिसमें उससे संबंधित स्वरलिपि पद्धति, गतें, ध्रुपद, धमार तथा ख्याल की प्राचीन तथा घरानेदार बंदिशें, तालों का सम्पूर्ण लिपिबद्ध क्रम, मात्रा, विभाग, खाली, ताली सहित संकलन किया गया होता है। (इसके अतिरिक्त रागों का स्वरुप तथा बंदिशों की स्वरलिपि मौजूद हो वह क्रियात्मक पुस्तकों की श्रेणी में आता है। आज जो वाग्गेयकार भिन्न–भिन्न बंदिशों व रागों का निर्माण कर रहे है उनका प्रचार क्षेत्रीय न रहकर विश्व प्रसिद्ध हुआ है तो इसका एक मात्र कारण संरक्षण है। परिणामतः इन पुस्तकों के संकलन से संगीत विद्यार्थी इन नए रागों को सीख सकते हैं अपना बौद्धिक विकास कर कुछ नवीन कार्य करने की प्रेरणा ले सकते हैं वर्तमान समय में प्रत्येक संगीत जिज्ञासु वर्ग गुरु शिष्य परंपरा द्वारा संगीत सीखने में असमर्थता के चलते इन पुस्तकों द्वारा लाभान्वित हो शास्त्रीय संगीत के स्तर को ऊंचा उठाने में सक्षम है क्रियात्मक संगीत से संबंधित पुस्तकें जैसे क्रमिक पुस्तक मालिका (1–6) भाग (भातखण्डे), अभिनव गीतांजली (पं० लालमणि मिश्र), राग रहस्य (1–5) बृहस्पति), नवीन ख्याल रचनावली (शंकरलाल मिश्र 'सुभरंग') स्वरांगिनी (प्रभा अत्रे) राग विज्ञान (विनायक राव पटवर्धन), सितार वादन एवं संगीत वाद्य (डा० अमिता शर्मा), तबला विशारद (डा० शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी) इत्यादि का शास्त्रीय संगीत की प्रगति की द्योतक है जो दिन–ब–दिन असंख्य मात्रा में मुद्रित हो शास्त्रीय संगीत का संरक्षण कर रही है। इसके अतिरिक्त द्वै–विष्णु के जन्म और विकास के पश्चात पुस्तकों की उपादेयता चरम उत्कर्ष पर पहुँच गई है।

सैद्धांतिक–व्यवहारिक पक्ष

सैद्धांतिक–व्यवहारिक पक्ष से संबंधित पुस्तकों की श्रेणी में संगीत के शास्त्र तथा क्रियात्मक दोनों पक्षा का समावेश रहता है। इस श्रेणी में रागों के परिचय आरोह, अवरोह तथा पकड़ के साथ बंदिशों की स्वरलिपि, आलाप, तान, रज़ाखानी, मसीतखानी गते द्रुत विलम्बित ख्याल का शास्त्रार्थ तथा क्रियात्मक स्वरूप, ताल, रस, भाव, रागांग, न्यास, वादी, सम्वादी इत्यादि का परिचय निहित रहता है।

ये पुस्तकें केवल संगीत विशेष वर्ग से ही नहीं ब्लकि आम जनता जो संगीत प्रेमी है, उनकी शास्त्रीय संगीत के सिद्धांतों तथा क्रियात्मक स्वरुप को समझने में सहायता प्रदान करती है। इन पुस्तकों की श्रेणी में राग विश्लेषण (उमा गर्ग), पंजाब की संगीत परंपरा (गीता पन्तल), हिन्दुस्तानी संगीत के अनमोल मणि, लालमणि मिश्र (डा० गुरप्रीत कौर), राग विशारद (लक्ष्मी नारायण गर्ग) इत्यादि विशेष वर्णनीय है जो साक्षर वर्ग को अपनी धरा की अमूल्य शास्त्रीय संगीत कला से परिचित कराती है।

अनुवादित पुस्तकें

अनुवादित पुस्तकों से अभिप्राय किसी अमुक भाषा में लिखित पुस्तक या ग्रंथ का किसी दूसरी भाषा में रूपांतरण। जैसे संस्कृत भाषा में लिखित ग्रंथ का हिन्दी में अनुवाद उदाहरणतयः शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक व सैद्धांतिक स्वरुप दर्शाती हुई कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार है–

'संगीत रत्नाकर के 'स्वरागताध्याय' का हिंदी अनुवाद जो कि लक्ष्मी नारायण गर्ग जी द्वारा किया गया इसी प्रकार पंडित अहोबल कृत 'संगीत पारिजात और पं० दामोदर कृत 'संगीत दर्पण' तथा पं० रामामात्य कृत 'स्वरमेल कलानिधि' का भी हिंदी टीका सहित अनुवाद संगीत कार्यालय हाथरस द्वारा प्रकाशित हो चुका है।[5] अनुवादित पुस्तकों के अविर्भाव का उद्देश्य आम वर्ग में उन्हीं की भाषा में कला व संस्कृति के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार हेत किया गया कार्य है। प्रत्येक भाषा व लिपि का ज्ञान होना आम वर्ग ही नहीं ब्लकि साक्षर वर्ग के लिए भी चुनौतीपूर्ण है मुद्रित व्यवस्था के अन्तर्गत इन पस्तकों का लगभग प्रत्येक क्षेत्रीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा में अनुवाद उपलब्ध है जो शास्त्रीय संगीत को सरल व सहज बनाते हुए क्रियाशील है।

संगीत कोष

इसके अतिरिक्त संगीत के कोष, जीवनीपरक कोश तथा पारिभाषिक शब्दकोष, भी वर्तमान समय में उपलब्ध है जिनके माध्यम से किसी शब्द का विशेष अर्थ, परिभाषा और सही अर्थ समझने में सुविधा होती है इन संगीत कोषों की आवश्यकता संगीत ग्रंथों पुस्तकों में प्रयुक्त सांगीतक शब्दावली को आम वर्ग के मध्य सहज व सरल बनाने हेत की गई। संगीत विषय से अनभिज्ञ पाठक को ग्राम, मूर्च्छना, श्रुति, स्थायी, वादी सम्वादी इत्यादि की समझ दर्शाने हेत इन कोषों का प्रादुर्भाव हुआ जिससे जनसाधारण के लिए शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली तथा उसके विख्यात घरानों, वाद्यों, गायन

शैलियों, गुरुओं के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध हो सकी। कभी–कभार किसी शब्द, घराने, संगीतज्ञों या वाद्यों पर विस्तृत लघु निबंध उनके चित्रों सहित पाठक की सरलता हेतु मुद्रित किए जाते हैं। कुछ एक संगीत कोषों के नाम इस प्रकार हैं–

Music Dictionary (Roy Bennet)
Ray-Dhun Dictionary (R.K. Dass)
Music India (Manorma Sharma)
Encyclopaedia dictionary of Music (Ashish Pandey)
हमारे संगीत रत्न (लक्ष्मी नारायण गर्ग)
संगीतार्णव इत्यादि (डा० सुनंदा पाठक)

विषय के विकास एवं स्तर को ऊँचा उठाने में इन संगीत कोशों का भी विशेष योगदान है। अतः शास्त्रीय संगीत के ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक पक्ष, भिन्न–भिन्न कलाकारों की जीवनियों, उनके निजी अनुभवों, भिन्न–भिन्न घरानों की गायन शैलियों तथा उनकी विशेषताओं, भिन्न–भिन्न शास्त्रीय वाद्य, उनकी बनावट तथा वादन विधि, स्वरलिपि पद्धति, सौंदर्यशास्त्र, रस, भाव तथा ललित कलाओं का संगीत से संबंध इत्यादि की ज्ञानवर्धक जानकारी का श्रेय मुद्रित माध्यमों को ही जाता है।

भले ही यह क्रियात्मक कला है और गुरु के सानिध्य में बैठकर ही इसका ज्ञान पाया जा सकता है किन्तु फिर भी स्वरलिपि पद्धति के लिखित स्वरुप व अनेक शास्त्रार्थ ज्ञान को सुरक्षित व विकसित आयाम तक पहुंचाने का श्रेय मुद्रण व्यवस्था को ही है।

पत्रिकाएं

शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं उन्नति का एक माध्यम पत्रिकाएं भी है ''पत्रिका से अभिप्राय होता है एक निश्चित अवधि पर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखी गई कहानी, कविता व लेख आदि। पत्रिकाओं का प्रकाशन समाज के विभिन्न वर्गों के लिए उनकी रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार होता है संगीत की पत्रिका से अभिप्राय है संगीत से संबंधित किसी विषय पर विशेष प्रकार की प्रस्तुति।''[6] संगीत विषय पर आधारित पत्रिकाओं की अनुक्रमणिका विभिन्न–विभिन्न लेखों, कहानियों, सगीतज्ञों के संस्मरण, उनके जीवन संबंधित अनुभवों व उनके साक्षात्कारों का विवरण, गायन शैलियों व संगीत जगत के समाचारों और भिन्न–भिन्न प्रकार के विषयों के अर्न्तनिहित होती है। इसके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत संबंधी भिन्न–भिन्न कार्यक्रमों की सूची, कार्यक्रम उपरात की समालोचना व समीक्षा, भिन्न–भिन्न संस्थाओं की स्थापना, पुस्तकों के प्रकाशन संबंधी सूचना भी इन पत्रिकाओं के द्वारा ही जनमानस तक सुलभ है। पत्रिकाओं को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. मासिक पत्रिकाएं–1 महीने बाद छपने वाली
2. त्रैमासिक–3 महीने बाद छपने वाली
3. छिमाही–6 महीने बाद छपने वाली
4. वार्षिक–1 साल बाद छपने वाली

मासिक पत्रिका की श्रेणी में संगीत, संगीत कला विहार, सुरछन्दा, श्रुति, अमृत कीर्तन (पंजाबी भाषा) आदि पत्रिकाएं है त्रैमासिक की श्रेणी में छायानट, दि जरनल ऑफ दि इंडियन म्यूज़िकलोजिकल सोसायटी, कलावार्ता, रस मंजरी, विश्ववीणा (बंगला भाषा), सांगीतिका इत्यादि पत्रिकाएं है छिमाही की श्रेणी में नाद नर्तन, भैरवी तथा वार्षिक पत्रिकाओं की श्रेणी में ध्रुपद वार्षिकी, ए जरनल ऑफ दी म्यूजिक अकादमी, नाद अर्चना, बागीश्वरी, जरनल ऑफ आई.टी.सी. इत्यादि है।

वर्तमान समय मे प्रत्येक विद्यार्थी, शोधार्थी और शिक्षक को व्यवसायिक औपचारिकताओं की पूर्ति हेतू इन पत्रिकाओं में अपने शोध–प्रपत्रों को छपवाना होता है जिससे युग की मांग के चलते इन पत्रिकाओं में अभिवृद्धि के साथ गुणात्मक स्तर पर भी शास्त्रीय संगीत संदर्भ में वृद्धि हुइ है परिणामस्वरुप शास्त्रीय संगीत की दिशा में महत्वपूर्ण विषयों क्रियात्मक, सैद्धांतिक और नए–नए शोध, रागों की उत्पत्ति के प्रायौगिक कार्य किए जा रहे हैं। एक समय था जब कोई विद्वान अपनी गुणवत्ता को किसी दूसरे को सुनाता या सिखाता नहीं था लेकिन आज विद्वानों की विद्ववता, संगीत की बंदिशों, शास्त्रीय संगीत पर दिए गए लेख, सुझाव इत्यादि इस प्रकाशित सामग्री में उपलब्ध रहते हैं। संगीत की सभी धाराओं पर देश के कोने–कोने से विद्वानों के मतों और अनुभवों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम ये पत्रिकाएं है।

इसके अतिरिक्त 'इंडियन एयरलाइन्स' की मासिक पत्रिका 'स्वागत' भिन्न–भिन्न संगीत के कलाकारों, उनके घरानों, गायन वादन शैलियों से संबंधित लेख छापने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आम जनता से हटकर एक विशिष्ट वर्ग जो अपने कारोबार के सिलसिले में व्यस्तता के कारण कहीं और ध्यान नहीं देता वायुयान में एकाग्रतापूर्वक बैठकर उन लेखों को पढ़कर शास्त्रीय संगीत की ओर आकृष्ट होता है।

शोध प्रबन्ध

जब संगीत ने विषय रुप में शिक्षण संस्थानों में प्रवेश किया, तभी से नए–नए प्रयोग करते हुए बी.ए, एम.ए, एम.फिल., पी.एच.डी., डी.लिट्, आदि उपाधि प्राप्त करने हेत शोध करना आवश्यक प्रतीत हुआ। परिणामस्वरुप लघु और दीर्घ प्रबंधों की रचना का मार्ग प्रशस्त हुआ, जो अन्ततः मुद्रित साहित्य के अन्तर्गत आए। इन शोध प्रबंधों का उद्देश्य संगीत के विभिन्न–विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना और गुणवत्ता के आधार पर कुछ नए आयाम समाज में उदृधत करना है उदाहरणार्थ भिन्न–भिन्न विषय इस प्रकार हैं–

1. 15वीं शताब्दी से आधुनिक काल तक पंजाब में शास्त्रीय संगीत का प्रादुर्भाव एवं विकास (जोगिन्द्र सिंह बावरा)।
2. अमीर खुसरो और भारतीय संगीत : एक विवेचनात्मक अध्ययन (रामेश्वरदयाल वर्मा)।
3. आसावरी थाट के रागों का सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक अध्ययन (वन्दना रस्तोगी)।
4. उज्जैन की संगीत परंपरा में तबला वादन शैली (पद्युम्न उद्धव)।
5. सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज का विकास क्रम, 18वीं शताब्दी से वर्तमान काल के संदर्भ में (अरेखा निगम)।
6. ख्याल शैली का विकास (मधुबाला सक्सेना)।
7. संगीत का आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक रहस्य (बाबूलाल शर्मा)।
8. पखावज का अवधी घराना और उसमें पागलदास का योगदान (राजखुशी राम)।

9. आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयुक्त सांगीतक शब्दावली का विश्लेषणात्मक अध्ययन (सत्येन्द्र कुमार चौबे)।
10. पद्मभूषण उस्ताद अमीर खां : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (इब्राहिम कासिम अली)[7] इत्यादि।

उपरोक्त शोध प्रबंधों द्वारा सिद्ध होता है कि संगीत के विभिन्न–विभिन्न पहलुओं, घरानों, वाद्यों, स्थान विशेष के शास्त्रीय संगीत, उनकी गायन विधियां, व्यक्ति विशेष के घराने उनकी बंदिशों का संग्रह, संगीत के मनोवैज्ञानिक आध्यात्मिक पक्षों इत्यादि ज्ञानवर्धक निबंध संगीत प्रेमियों को मुद्रण व्यवस्था के कारण ही लाभान्वित कर रहे हैं।

समाचार पत्र

जहां पत्रिकाएं शास्त्रीय संगीत संरक्षण हेतु क्रियाशील है वहीं समाचार पत्र भी इसके प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ''अनेक नई जानकारी तथा सूचनाओं को लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से प्रकाशन व्यवस्था की होती है जिसे एक निश्चित समय में प्रकाशित होने वाले पत्र में मुद्रित कराया जाता है तथा उसे समाचार पत्र की संज्ञा दी जाती है।''[8]

''वह सभी कुछ जिससे आप कल तक अनभिज्ञ थे, समाचार है (टर्नर कॉलेज)।''[9] ये मुद्रित माध्यम शास्त्रीय संगीत प्रगति के आवश्यक घटक है उदाहरणतय : जैसे समाचार पत्रों में 'संगीत चिकित्सा' के संबंध में कोई लेख छपता है तो आम जनता की जिज्ञासा इस मुख्य शीर्षक को पढ़कर जरूर बढती है और इस क्षुधा को शांत करने हेतु वह संगीत को जानने का प्रयास करते हैं और व्यवहारिक रुप में लाने की चेष्टा करते है परिणामस्वरुप वह शास्त्रीय संगीत के महत्व को समझते है शास्त्रीय संगीत की समकालीन गतिविधियों से अवगत कराने में इसमें छपने वाले विज्ञापन जिसमे शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम, तिथि, स्थान विशेष, आयोजकों, कलाकारों के नाम इत्यादि की सूची सहज ही मिल जाती है और कार्यक्रम के बाद की समीक्षा व समालोचना द्वारा कलाकारों में इन कार्यक्रमों में भाग लेने की जिज्ञासा ओर बढ़ती है और वह ओर भी मेहनत कर नई–नइ घरानेदार बंदिशों को जनमानस में प्रस्तुत करते है जो पहले के समय में दुर्लभ थी। कलाकार की प्रशंसा समाचार पत्रों में छपने से उनमें सम्मान का भाव आता है। और वह अपना कार्य और भी तन्मयता और खुले दिल से करते हैं। भारत सरकार द्वारा दिए गए सम्मानों यथाः 'भारत रत्न', 'पदम् भूषण', 'पद्म श्री', प्रत्येक वर्ष किस गायक, वादक कलाकार को मिला। इन सबकी सूची समाचार पत्रों की मुद्रण व्यवस्था का ही परिणाम है चूंकि भारत विभिन्न–विभिन्न भाषाओं का राष्ट्र है इसलिए यहां हिन्दी अंग्रेज़ी के अतिरिक्त प्रत्येक प्रांतीय भाषा में समाचार पत्र उपलब्ध है। समाचार पत्रों में दिए गए लेख कार्यक्रम संबंधी सूचना के कुछ शीर्षक इस प्रकार है यथाः

1. ''हरिवल्लभ के कुंभ में शास्त्रीय संगीत सुनते–सुनते बीत गई सारी रात।''[10]
2. ''सुनन्दा के गायन ने श्रोताओं को बाधे रखा।''[11]
3. ''सितार पर बिखरा 'पूछो न कैसे मैने रैन बिताई' 'दिल्ली घराने के सईद जफर ने समा बांधा।''[12]
4. ''तन को भी दुरस्त रखता है शास्त्रीय संगीत''[13]
5. "Driving force of Dhrupad"[14]
6. "Guru Shishya Parampra" इत्यादि।[15]

इसके अतिरिक्त कुछ समाचार पत्र सप्ताह में एक दिन संगीत समीक्षा भी दे देते हैं तो कछ कोई निश्चित दिन न रखकर कभी भी संगीत संबंधी समीक्षा प्रस्तुत कर देते हैं जैसे पंजाबी भाषा में छपा 'आशियाना' अखबार तिथि 24 दिसंबर 2011 जो 136 वां तीन दिवसीय बाबा हरिवल्लभ शास्त्रीय संगीत सम्मेलन को पूर्ण रूप से समर्पित था यह सभी प्रकार की गतिविधिया शास्त्रीय संगीत की प्रगति की द्योतक है इसके साथ ही वर्तमान समय में प्रत्येक संस्था अपने द्वारा आयोजित संगीत समारोहों की समुद्रित सामग्री जो समाचार पत्रों में छपी होती है, को वार्षिक रिपोर्ट हेतू सरंक्षित करके रखते है प्रतियोगिता के आधार पर प्रत्येक संस्था समाचार पत्रों में अपनी संस्था को सर्वोतम दर्शाने हेतू बढ़–चढ़ कर भाग लेते है किसी भी प्रकार से ये शास्त्रीय संगीत प्रगति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं इस प्रकार समाचार पत्रों द्वारा भिन्न–भिन्न विद्वानों से लिए गए साक्षात्कार, जीवन परिचय, रियाज़ करने के ढंग, भिन्न–भिन्न सांगीतिक समारोहों जैसे हरिवल्लभ समारोह, तानसेन संगीत समारोहों तथा संगीत प्रगति में कार्यरत भिन्न–भिन्न संस्थाओं जैसे आई.टी.सी. स्पिक मैके इत्यादि से अवगत होने का सुअवसर रहता है।

इसके साथ–साथ विद्यालय, विश्वविद्यालय, आकाशवाणी, दूरदर्शन, डी.डी. भारती इत्यादि में स्थान पूर्ति हेतू दिए गए विज्ञापन की सूचना का प्राथमिक स्त्रोत ये समाचार पत्र ही है जो निरंतर शास्त्रीय संगीत का संरक्षण कर रहे हैं।

डाक टिकट

मात्र ये सोचने की बात है कि एक छोटी सी डाक टिकट द्वारा किस प्रकार शास्त्रीय संगीत का संरक्षण हो सकता है ये बात बड़ी सोचने की है परन्तु जब हम डाक टिकटों पर दृष्टिपात करते हैं तो यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि शास्त्रीय संगीत के संरक्षण में यथा–कथा इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वास्तव में डाक टिकट किसी राष्ट्र की श्रेष्ठ परम्पराओं और प्रकृति के दर्शन करने का प्रमुख मुद्रित माध्यम है जिसमें जीवन से संबंधित भिन्न–भिन्न पहलुओं जैसे कला, व्यापार, प्रकृति, इतिहास एवं दस्तकारी की झलक पाई जाती है। ''भारतीय इतिहास संतों और योद्धाओं का इतिहास है जिसमें राष्ट्रीय नेताओं को तो याद किया जाता है किन्तु कलाकारों को नहीं। 101 साल पहले पैदा हुए नाजुक से आदमी भातखण्डे का हमारी संस्कृति को क्या देन है इसको दर्शाने के लिए भारत सरकार द्वारा 1 सितंबर 1961 को एक डाक टिकट जारी किया गया ताकि कम से कम नौजवान पीढ़ी के लोग इसे जान सके कि इस आदमी ने हमारे संगीत को संरक्षित रखने में कितना बड़ा योगदान दिया है।''[16]

परन्तु वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा शास्त्रीय संगीत कला के संरक्षण में अनिवाचनीय योगदान दिया है शास्त्रीय संगीतज्ञों को पद्य भूषण, भारत रत्न जैसी उपाधियों के साथ–साथ एक अन्य विशेष सम्मान डाक टिकटों पर उनके चित्र अंकन द्वारा भी मिला है। जिनमें से कुछ एक कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं

'1961 त्यागराज, 1973 पलुस्कर, 1974 देवी सरस्वती, 1975 श्यामाशास्त्री, 1976 मुत्थुस्वामी दीक्षीतर, 1985, हरिदास, 1986 तानसेन, 1994, बेगम अख्तर, 1997 ओंकारनाथ ठाकुर, 1999 अलाऊद्दीन खां, 2008 बिस्मिल्लाह खां इत्यादि।'[17] हाल ही में भारत सरकार द्वारा 2014 वर्षांक में आठ शास्त्रीय संगीत गायक–वादक कलाकारों के चित्र डाक टिकटों पर चित्रांकित कराए है जो शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार हेतू एक सराहनीय कदम है 'वे आठ नाम है विलायत खां, अली अकबर खां, मल्लिकार्जुन मंसूर, भीमसेन जोशी, कुमार गंधर्व, डी० के पट्टामल, गंगू बाई हंगल, पं रविशंकर जी।'[18] इन कलाकारों के मुद्रित चित्रांकन से नवीन वर्ग के लोगों को प्रेरणा मिलती है और उनमें यह भाव आता है कि वह भी कुछ ऐसा कार्य करें जो शास्त्रीय संगीत के स्तर को ऊंचा उठाने में सक्षम हो और उनके भी चित्र इस प्रकार जाने जाए। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में ये जनमानस पर अपना विशेष प्रभाव डालते हुए शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार में सहायी है और सदैव क्रियाशील है। 'कभी–कभार सांगीतिक वाद्यों जैसे रूद्र वीणा, सरोद, दो बांसरिया, पखावज इत्यादि का वर्णन भी इन डाक टिकटों में चित्रित चित्रों से मिलता है।'[19]

अतः इस प्रकार भारतीय डाक विभाग ने समय–समय पर शास्त्रीय संगीत संबंधी डाक टिकटों को प्रकाशित कर संगीत क्षेत्र को बढ़ाते हुए संगीत का मान बढ़ाया है और विभुतियों और वाद्यों का संरक्षण किया है।

पोस्टकार्ड

डाक–टिकटों के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत को विकसित तथा संरक्षित रूप प्रदान करने में पोस्टकार्ड भी पीछे नहीं है। संगीत की ओर आकृष्ट करने का एक माध्यम पोस्टकार्ड भी है जो स्थान विशेष की संस्कृति, जलवायु, सभ्यता का प्रदर्शनीय तथा विश्वव्यापी माध्यम है। 'इस दिशा में भारतीय हवाई कंपनियों में से 'एयर इंडिया' ने शास्त्रीय संगीत के पोस्टकार्ड मुद्रित किए है जो शास्त्रीय संगीत के प्रचार स्वरुप सहायक है।

प्रथम पोस्टकार्ड में महाराजा को वीणा पर राग मालकौंस बजाते, द्वितीय पोस्टकार्ड में महाराजा को बांसुरी पर राग बसंत, तृतीय में तानपुरा लिए दीपक राग, चतुर्थ में हाथ में तबला लिए काफी राग की परिकल्पना करते हुए दिखाया गया है।'[20]

पोस्टर

शास्त्रीय संगीत के प्रचार का प्रसार हेतू पोस्टकार्ड के साथ–साथ रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, चौराहों, थियेटर, शहर के मुख्य स्थानों में लगाए जाने वाले पोस्टर की भी महत्वपूर्ण भूमिका है पोस्टर का प्रयोग विज्ञापन का विशेष माध्यम है प्राचीन काल में जब मुद्रण मशीनों का अविष्कार नहीं हुआ था तब भी हाथ से लिखे पोस्टरों का उपयोग विज्ञापन माध्यम के रूप में होता था और आज के युग में पोस्टर सूचना व प्रचार का एक अभिन्न अंग है इन पोस्टरों का मुख्य उद्देश्य अपनी बात को आकर्षक ढंग से दर्शकों के समक्ष रखना है शास्त्रीय संगीत के प्रगति के द्योतक इन पोस्टरों में भविष्य में हो रहे कार्यक्रमों, आयोजकों, आ रहे कलाकारों की सूची निहित होती है जिसमें तिथि, स्थान, शुल्क अथवा निः शुल्क इत्यादि का विवरण होता है। नित्य प्रति अपने कार्य में जा रहे व्यक्ति विशेष को इन कार्यक्रमों की सूचना सहज ही प्राप्त हो जाती है इस प्रकार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में ये पोस्टर शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं विकास में सहायी है।

होर्डिंगस

पोस्टर की भांति होर्डिंग भी एक बाहरी मुद्रित माध्यम है जो बाजार में चौराहों और मुख्य सड़के के किनारे अपने विशाल आकार द्वारा लोगों के आर्कषण का केन्द्र बनता है। 'सामान्यतयः ये 20 'x30', *20x20' और 20x40* आकार में अधिक दिखाई देत है। अधिकतर इनमें मुख्य शीर्षक, एक चित्र, और आयोजक व प्रतिनिधि संस्था का नाम या प्रतीक चिन्ह ही होता है होर्डिंगस लगाने के स्थान अधिकतर बाहरी विज्ञापन ऐजेसियों के अधीन रहते हैं जो साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक आधार पर विज्ञापनकर्ता से जगह का किराया वसूल करते है। ये होर्डिंगस अधिक लागत वाले और महंगे होते हैं।'[21]

इन होर्डिंगस द्वारा शास्त्रीय संगीत संबंधी कार्यक्रम, कलाकारों आयोजकों की सूचना जनता को उपलब्ध होती है। जो वाहन पर जाते लोग, पथिक आसानी से पढ़ कर उस कार्यक्रम विशेष की सूचना अन्य लोगों तक भो पहुंचा सकते है आजकल तो नियान प्रकाश द्वारा रात को भी ये होर्डिंगस बहुत ही आकर्षक प्रतीत होते हैं। इस प्रकार शास्त्रीय संगीत रूपी पौधे को सिंचित करने में सहायक ये होर्डिंगस मुद्रित व्यवस्था के आवश्यक घटक हैं।

फलैक्स

वर्तमान समय में फलैक्स का बोलबाला अधिक है। ये देखने में आकर्षक तथा साफ स्पष्ट डिजाईन किए जाते हैं जिससे जन साधारण प्रभावित होता है इसमें शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम समय, स्थान, कलाकार, आयोजक, प्रतिनिधि संस्था इत्यादि का विवरण छपा होता है जो आम जनता राह चलते फिरते पढ़ती है और उनकी विशेष रूचि संगीत की ओर बढ़ती है। कलाकार के छाया चित्रों तथा अन्य वाद्यों की साज सज्जा द्वारा बहुत कलात्मक ढंग से इन मुद्रित माध्यमों का चित्रांकन कर दर्शक को आकृष्ट किया जाता है।

पैम्फलेट्स

शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार हेतू इनका भी अपना विशेष योगदान है ये कागज का एक पन्ना या आपस में बंधे कछ अन्य पन्ने होते हैं जिन्हें जिल्द नहीं किया जाता। समाचार पत्रों में भी इनका छोटा रूप मिलता है इस लघुपुस्तिका में भी वहीं जानकारी उपलब्ध होती है जो बड़े रूप में हार्डिंगस, फलैक्स, पोस्टर इत्यादि में छपती है।

बुकलेट्स

बुकलेटस भो शास्त्रीय संगीत संरक्षण का एक विशेष मुद्रित माध्यम है जिसमें अमुक स्थान पर अमुक संस्था द्वारा अमुक संगीतकार की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम संबंधी रूपरेखा छपी होती है उदाहरणतयः हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन के कार्यक्रम की रूपरेखा पर बनाई गई बुकलेट। इसमें श्रोता को यह सुविधा होती है कि उनका पसंदीदा कलाकार गायक या वादक की प्रस्तुति कब और कितने समय पर है, इसकी जानकारी इन बुकलेटस द्वारा सहज हो जाती है परिणामस्वरुप वर्तमान समय में व्यक्ति के पास समय के अभाव

फलस्वरूप वह अपने पसंदीदा कलाकार के लिए वक्त निर्धारित कर लेता है। इसका स्वरुप कागज के कुछ एक पन्नों का संग्रह होता है जिसमें संबंधित कार्यक्रम की सूचना, कलाकार तथा उनके चित्र व श्रेणी सहित बुकलेट में छपा होता है और बाहरी आंवरण कुछ मोटाई में होता है। अतः शास्त्रीय संगीत संरक्षण की समस्त जानकारी जो अतीत में घटित है या भविष्य में घटित होने वाली है समस्त जानकारी का आधार मुद्रित व्यवस्था के अन्तर्गत ये बुकलेटस भी है।

इन सभी मुद्रित माध्यमों का प्रकाशन व्यक्तिगत, सामाजिक तथा स्वतन्त्र प्रकाशन होता है। इन मुद्रित माध्यमों का मुख्य कार्य सार्वजनिक सूचना पेश करते हुए किसी कार्यक्रम के प्रति व्यक्ति विशेष का दृष्टिकोण व ध्यान अपनी ओर सकारात्मक रूप में बदलना या आकृष्ट करना है। विज्ञापन द्वारा भी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण व प्रचार प्रसार में कार्य किए जा रहे हैं। यथा *OCM मिल अमृतसर द्वारा बनाए गए कालीन कवरों के विज्ञापन हेतू शास्त्रीय वाद्य सितार का प्रदर्शन एक महत्वपूर्ण मुद्रित नमूना है।'[22] इसके साथ–साथ फैशन के दौर का चलन इस कदर बढ़ चुका है कि 'कपड़े के व्यापारियों द्वारा टी. शटर्स पर I love classical music जैसे स्लोगन और शास्त्रीय वाद्यों की छपाई भी शास्त्रीय संगीत प्रचार में अपनी विशेष भूमिका निभा रहे ह और अपनी संस्कृति से जन साधारण को परिचित करवा रहे है।'[23] ये कपड़े के व्यापारी वर्तमान समय में अपने वस्त्रों की बिक्री के लिए सांगीतिक चित्रों का अंकन जनमानस को आकर्षित करने के प्रयत्न स्वरुप करते हैं। जहां यह साधन शास्त्रीय संगीत का संरक्षण करते हैं वहीं इसकी लोकप्रियता को दर्शाने के महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

फोटोग्राफी

'दृश्य माध्यम शब्द माध्यम से अधिक प्रभावशाली और व्यापक होता है इसकी पहुंच साक्षर और निरक्षर दोनों की संवेदना तक होती है एक निरक्षर व्यक्ति भी फोटो को देखकर उसका भावार्थ समझ सकता है।'[24] इसलिए फोटो ग्राफी को संचार–प्रचार के आवश्यक अंग के रूप में स्वीकार किया गया है और सार्वभौम भाषा कहा जा सकता है शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के चित्र, लुप्त हो चुके वाद्यों, तत्कालीन मंच सज्जा, शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम की स्मृतियां इत्यादि, जो आज से 60–70 वर्ष पूर्व या इससे भी प्राचीन है, की जानकारी और संरक्षित रखने का सशक्त माध्यम फोटोग्राफी अर्थात छायाचित्र है जो युवा पीढ़ी को पुराने कलाकारों के चित्रों तथा तत्कालीन वाद्यों के चित्रों, शास्त्रीय संगीत समारोहों की स्मृतियों इत्यादि से अवगत कराते हैं।

निष्कर्ष

मुद्रित माध्यमों के अविर्भाव से शास्त्रीय संगीत की प्रगति व लोकप्रियता दिन–ब–दिन तीव्रगति से बढ़ती जा रही हैं भले ही आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का है किंतु मुद्रित माध्यम सबसे प्राचीनतम माध्यम है क्योंकि यदि यह न होता तो जनमानस आज से हज़ारों वर्ष पूर्व लिखित ग्रंथों जैसे रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र, बृहद्येशी, संगीत रत्नाकर तथा अन्य सांगीतिक ग्रंथों के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ रह जाता, और जो द्वै विष्णु द्वारा तत्कालीन घरानेदार बंदिशों को लिखित प्रारुप देकर संरक्षित करने की सोच को मुद्रित करने की चेष्टा न की होती तो वर्तमान समय में जो संगीत क्रमानुसार प्रगति पथ पर अग्रसर होकर आसमानी बुलन्दियों को छू रहा है वहां न होता। इस प्रकार शास्त्रीय संगीत को जन–जन तक पहुंचाने का प्राथमिक आधार मुद्रित माध्यम हैं क्योंकि कहा जाता है ''कि इलैक्ट्रानिक मीडिया के लिए बनने वाले प्रत्येक कार्यक्रम का प्राथमिक स्वरुप लिखित ही होता है अतः प्रिंट मीडिया इलैक्ट्रानिक मीडिया का भी सशक्त आधार है।''[25] ''आज के इस कम्प्यूटर युग में हम पुस्तकों की रचना बड़ी तीव्र गति से कर रहे हैं परन्तु तब किसी पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि निकालने में वर्षों लग जाते थे।''[26] अतः शास्त्रीय संगीत संरक्षण तथा विकासत्मक स्तर तक पहुंचाने में ग्रंथ, पुस्तकों, पत्रिकाओं डाक टिकटों तथा अन्य प्रचार के संसाधनों जैसे पोस्टर हार्डिंग, पोस्टकार्ड, फोटोग्राफी इत्यादि का विशेष योगदान है यदि मुद्रित माध्यमों को रोशनी का पर्याय माना जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि इसका एकमात्र लक्ष्य जनमानस में व्याप्त अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटा कर उज्ज्वल भविष्य की कामना है संक्षेप रूप कहा जा सकता है कि मुद्रित माध्यम शास्त्रीय संगीत संरक्षक तथा प्रचार–प्रसार के मुख्य कारक है जो शास्त्रीय संगीत को चरम उत्कर्ष तक पहुंचाने में सक्षम तथा सदैव क्रियाशील है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गौतम रूपचन्द (2008) प्रिंट मीडिया (सिद्धांत एवं व्यवहार), श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, पृ० 13–14
2. पतंजलि डा० प्रेमचंद (2008) संचार सिद्धांत की रूपरेखा, के.एल. पचौरी प्रकाशन गाजियाबाद, पृ० 59–61
3. मीणा, डा० राम लखन (2012) मीडिया विमर्श : आधुनिक संदर्भ, कल्पना प्रकाशन दिल्ली, पृ० 51–52
4. शर्मा, राधिका (2006) भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, संजय प्रकाशन दिल्ली, पृ० 173
5. कपूर, तृप्त (1989) उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, हरमन पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, पृ० 143
6. यमन, अशोक कुमार (2011) रेडियो और संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स नई दिल्ली, पृ० 44
7. गर्ग, लक्ष्मी नारायण (जनवरी 2015) संगीत 80 वर्षीय संगीत अंक, संगीत कार्यालय हाथरस पृ० 129–175
8. आनंद, विजय कुमार (2008) इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी, रजत प्रकाशन नई दिल्ली, पृ० 184
9. गौतम, रूपचन्द्र (2008) प्रिंट मीडिया : सिद्धांत एवं व्यवहार, श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, पृ० 115
10. पंजाब केसरी, 30 दिसंबर 2001, दिन रविवार, पंजाब।
11. दैनिक जागरण, 19 अक्टूबर 2003, दिन रविवार, वाराणसी।
12. अमर उजाला, 19 दिसंबर 2006, दिन मंगलवार, जम्मू।
13. दैनिक जागरण 13 दिसंबर 2015, लखनऊ।
14. The Tribune, 7 August 2011, Chandigarh, Punjab.

15. The Tribune, 24 Sep, 2011, Chandigarh, Punjab.
16. योजना पत्रिका, 10 सितंबर 1961, संगीत के रक्षक भातखण्डे, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ० 9
17. गर्ग, लक्ष्मी नारायण (जनवरी 2015) संगीत 80 वर्षीय अंक, संगीत कार्यालय हाथरस, पृ० 59–64
18. http//postagestamps.gov.in/indianclassicalmusic.aspx
19. गर्ग, लक्ष्मी नारायण (जनवरी 2015) संगीत 80 वर्षीय अंक, संगीत कार्यालय हाथरस, पृ० 64
20. शर्मा, राधिका (2006) भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, संजय प्रकाशन दिल्ली, पृ० 213
21. मीणा, राम लखन (2012) जनसंचारिकी : सिद्धांत और अनुप्रयोग, कल्पना प्रकाशन दिल्ली, पृ० 284
22. शर्मा, राधिका (2006) भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, संजय प्रकाशन दिल्ली, पृ० 197
23. www.google.com
24. आनंद, विजय कुमार, नैम, राकेश (2008) इलैक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी, रजत प्रकाशन नई दिल्ली पृ० 96
25. आर्य, पी.के. (2007) इलैक्ट्रानिक मीडिया, प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली, पृ० 23
26. रैना, गौरी शंकर (2005) संचार टैक्नालाजी, श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, पृ० 24–25